CHAPTER - 9
आत्मत्राण

प्रश्न अभ्यास

प्रश्न क:

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

(1).
कवि किससे और क्या प्रार्थना कर रहा है?

उत्तर 1:

कवि ईश्वर से यह प्रार्थना कर रहा है कि भले ही मेरे ऊपर किनती भी विपदाएं क्यों न आ जाएं मगर मेरा आप पर विश्वास सदा बना रहे ।

(2).
'विपदाओं से मुझे बचाओ, यह मेरी प्रार्थना नहीं'। कवि इस पंक्ति के द्वारा क्या कहना चाहता है ?

उत्तर 2:

कवि ईश्वर से यह कह रहा है कि आप मुझे आने वाली परेशानियों से बचाओ , मैं यह प्रार्थना नहीं कर रहा हूँ केवल मुझे उनसे लड़ने की और सामना करने की शक्ति प्रदान कर दो ।

(3).
कवि सहायक के न मिलने पर क्या प्रार्थना करता है ?

उत्तर 3:

कवि यही प्रार्थना करता है कि जीवन में परेशानियों को दूर करने के लिए भले ही कोई सहायता न करे लेकिन आप मुझ पर अपनी कृपा बनाए रखना ।

(4).
अंत में कवि क्या अनुनय करता है ?

उत्तर 4:

अंत में कवि यही अनुनय करता है कि संसार में मुझे कितना ही धोखा क्यों न मिले , मैं पूरी तरह से टूट जाऊँ फिर भी मेरा आप पर से विश्वास न उठे आप पर मेरी आस्था सदैव बनी रहे ।

(5).
'आत्मत्राण' शीर्षक की सार्थकता कविता के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए।

उत्तर 5:

'आत्मत्राण' का अर्थ है अपनी आत्मा का त्राण करना या शुद्धि करना कवि यही चाहता है कि कितनी ही सांसारिक परेशानियॉ झेलनी पड़ें लेकिन उनका सामना करने की ताकत कम न हो और ईश्वर पर विश्वास भी सदा बना रहे । यही इस शीर्षक की सार्थकता है जो अपने आप में पूर्ण है ।

(6).
अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए आप प्रार्थना के अतिरिक्त और क्या–क्या प्रयास करते हैं ? लिखिए।

उत्तर 6:

अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए ईश्वर की भक्ति के अतिरिक्त उपवास सत्संग मन्नत तीर्थाटन और गरीबों को दान करते हैं ।

(7).
क्या कवि की यह प्रार्थना आपको अन्य प्रार्थना गीतों से अलग लगती है ? यदि हाँ, तो कैसे ?

उत्तर 7:

कवि की यह प्रार्थना हमको अन्य प्रार्थना से इसलिए अलग लगती है क्योंकि हम हर प्रार्थना में ईश्वर से कुछ न कुछ मॉगते रहते है अपने कल्याण और दुखों को दूर करने की बात करते हैं । मगर इस प्रार्थना में कवि ने ईश्वर से दुखों को दूर न करने बल्कि उनका सामना करने और अपना विश्वास उन पर बना रहने की प्रार्थना की है ।

प्रश्न ख:

निम्नलिखित का भाव स्पष्ट कीजिए ।

(1).
नत शिर होकर सुख के दिन में
तव मुख पहचानूँ छिन–छिन में।

उत्तर 1:

कवि का कहना है कि वह सुख के दिनों में भी अपने ईश्वर को वैसे ही याद रखे जैसे दुख के दिनों में रखता था , बल्कि और ज्यादा प्रसन्नता के साथ।

(2).
हानि उठानी पड़े जगत् में लाभ अगर वंचना रही
तो भी मन में ना मानूँ क्षय।

उत्तर 2:

कवि का कहना है कि जीवन में कितनी ही हानि उठानी पड़े भले ही कोई सुख न मिले फिर भी मन में जरा सा भी दुख का अहसास न हो ।

(3).
तरने की हो शक्ति अनामय
मेरा भार अगर लघु करके न दो सांत्वना नहीं सही।

उत्तर 3:

कवि की यही प्रर्थना है कि मेरे अंदर इन दुखों से तरने की इतनी शक्ति प्रदान कर दो कि मैं इनसे हॅसते–हॅसते बाहर निकल जाऊॅ भले ही तुम मेरे दुखों के भार को कम न करो और सांत्वना भी न दो पर अपनी कृपा बनाए रखो।